बक्सर का युद्ध तथा उसका महत्व

कंपनी तथा नवाब में युद्ध 1763 में ही आरम्भ हो गया। कई झड़पें हुई तथा मीर कासिम ने हार खाई एवं बच कर वह अवध पहुंचा तथा अवध के नवाब तथा मुगल सम्राट से मिलकर अंग्रेजों को बंगाल से बाहर निकालने की योजना बनाई। इन तीनों की सम्मिलित सेना, जिसमें 40 तथा 50 हजार के बीच सैनिक थे, की टक्कर कंपनी सेना से हुई। कंपनी की सेना में 7072 सैनिक थे तथा उसकी कमान मेजर मुनरो के हाथ में थी। युद्ध बक्सर में 22 अक्तूबर, 1764 को हुआ। दोनों दलों की क्षति अत्यधिक हुई, परन्तु मैदान अंग्रेजों के हाथ रहा।

दोनों पक्षों में घमासान युद्ध हुआ। अंग्रेजों के 847 सैनिक घायल हुए या मारे गए तथा दूसरी ओर के 2000 लगभग घायल हुए तथा मारे गए। प्लासी का युद्ध, युद्ध-कौशल से नहीं जीता गया। वहां विश्वासघात हुआ था, परन्तु यहां दोनों ओर से डट कर युद्ध किया गया। तैयारी पूरी थी। निश्चय ही यह अधिक कुशल सेना की जीत थी।

बक्सर ने प्लासी के निर्णयों पर पक्की मोहर लगा दी। भारत में अब अंग्रेजों को चुनौती देने वाला कोई दूसरा नहीं रह गया था। अब नया नवाव उनकी कठपुतली था। अवध का नवाब उनका आभारी तथा मुगल सम्राट उनका पेन्शनर था। इलाहाबाद तक का प्रदेश अंग्रेजों के चरणों में आ गया तथा दिल्ली का मार्ग खुला था। इसके पश्चात बंगाल तथा अवध ने अंग्रेजों के अधिकार से बाहर आने का प्रयत्न नहीं किया तथा उनका फंदा और भी सुदृढ़ होता चला गया।

प्लासी के युद्ध ने बंगाल में अंग्रेजों की शक्ति को सुदृढ़ किया तथा बक्सर के युद्ध ने उत्तरी भारत में तथा अब वे समस्त भारत पर दावा करने लगे थे। इसके पश्चात् मराठों तथा मैसूर ने कुछ चुनौती देने का प्रयत्न किया। परन्तु भारत की दासता अब स्पष्ट थी; केवल समय का प्रश्न था। बक्सर का युद्ध भारतीय इतिहास में निर्णायक सिद्ध हुआ।

ऐसा माना जाता है कि बक्सर के युद्ध का सैनिक एवं राजनैतिकं महत्व प्लासी के युद्ध से अधिक था। मुगल सम्राट, बंगाल का नवाब एवं अवध का नवाब तीनों अब पूर्ण रूप से कठपुतली शासक हो गये। उन्हें अंग्रेजी सेना के समक्ष अपने बौनेपन का अहसास हो गया था। थोड़ा-बहुत विरोध का स्वर मराठों और सिक्खों में सुनाई दिया। वह भी समाप्त हो गया।

मीर कासिम को हटा कर एक बार पुन: मीर जाफर को

Scanned with CamScanner

अंग्रेजों ने बंगाल का नवाब बनाया। 5 जनवरी, 1765 को मीर जाफर की मृत्यु हो गई। इसकी मृत्यु के बाद कंपनी ने इसके अयोग्य पुत्र निजामुद्दौला को बंगाल का नवाब बना कर 20 फरवरी 1765 में उससे एक संधि कर ली। संधि की शर्तों के अनुसार रक्षा व्यवस्था, सेना, वित्तीय मामले, बाह्य सम्बन्धों पर नियंत्रण आदि को अंग्रेजों ने अपने अधिकार में कर लिया।

द्वैध शासन प्रणाली की व्याख्या

क्लाइब ने बंगाल में दोहरी सरकार कायम की, जिसमें वास्तविक शक्ति कम्पनी के पास थी, पर प्रशासन का भार नवाब के कन्धों पर था। इस तरह दीवानी और निजामत, जिसमें दीवानी के अन्तर्गत राजस्व वसूल करने का अधिकार तथा निजाम के अन्तर्गत सैनिक संरक्षण तथा विदेशी मामलों के अधिकार पूर्ण रूप से कम्पनी के हाथों में आ गये। द्वैध शासन की व्यवस्था के आधार पर कम्पनी द्वारा वसूले गये राजस्व में से 26 लाख रुपये प्रतिवर्ष सम्राट को तथा 52 लाख रुपये बंगाल के नवाब को शासन के कार्यों के संचालन के लिए दिया जाना था, शेष बचे हुए भाग को वह अपने पास रखने के लिए स्वतन्त्र थी। इस प्रकार कम्पनी ने राजस्व वसूलने का अधिकार तथा नवाब ने शासन चलाने की जिम्मेदारी ग्रहण की। क्लाइब ने मोहम्मद खां, राय दुर्लभ एवं शिताबराय को दीवान के पद पर नियुक्त किया।

शीघ्र ही द्वैध शासन प्रणाली का दुष्परिणाम भी देखने को मिला। देश में कानून व्यवस्था अस्त--व्यस्त हो गई और न्याय बीते समय की बात होकर रह गया। द्वैध शासन से कृषि व्यवस्था पर प्रभाव पड़ा, राजस्व वसूली सर्वोच्च बोली बोलने वाले को दी जाने लगी और उस पर से 1770 में बंगाल के अकाल ने तो कृषकों की जैसे कमर ही तोड़ दी।

द्वैध शासन का व्यापार तथा व्यवसाय पर भी गलत प्रभाव पड़ा। भारतीय व्यापारियों के शोषण की गति तीव्र हो गई। बंगाल के वस्त्र तथा रेशम उद्योग इससे काफी प्रभावित हुए। द्वैध व्यवस्था मात्र ब्रिटिश हित को ही सर्वोपरि रखती थी। क्लाइब द्वारा निजी व्यापार तथा उपहार लेने पर रोक लगाने से भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला, इसने आन्तरिक कर संग्रह को अनिवार्य बना दिया। क्लाइब ने कंपनी के सैनिकों को जो दोहरे भत्ते शांति काल में मिलते थे, उस पर रोक लगा दी, यह सुविधा केवल बंगाल के सैनिकों को ही प्राप्त थी। क्लाइब के आदेश के अनुसार 1766 से यह भत्ते केवल उन सैनिकों को दिये जाने लगे जो बंगाल एवं बिहार की सीमा से बाहर कार्य करते थे। मुंगेर तथा इलाहाबाद में कार्यरत श्वेत सैनिक

Scanned with CamScanner

अधिकारियों ने इस व्यवस्था का विरोध किया जिसे कालान्तर में 'श्वेत विद्रोह' के नाम से जाना गया। क्लाइब इस विद्रोह को दबाने में सफल हुआ।

द्वैध प्रणाली का कृषि के क्षेत्र में बुरा प्रभाव पड़ने का कारण था; 1769-70 बंगाल का भयंकर अकाल जिसके परिणामस्वरूप बंगाल की एक तिहाई जनसंख्या नष्ट हो गई। इस दुखद घटना ने द्वैध शासन व्यवस्था की कलाई ही खोल दी, फलस्वरूप 1772 में इस प्रणाली को खत्म कर दिया गया।

ब्रिटिश राज्य के संस्थापक के रूप में क्लाइब के योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। इसने कम्पनी के कार्यकत्ताओं के लिए 'सोसायटी ऑफ ट्रेड' का निर्माण किया, जिसको नमक, सुपारी, तम्बाकू के व्यापार का एकाधिकार प्राप्त था। यह निकाय उत्पादकों से समस्त नकद में लेकर निश्चित केंद्रों पर फुटकर व्यापारियों को बेच देता था। फरवरी 1767 में क्लाइब इंग्लैंड वापस चला गया।

Scanned with CamScanner